पाठ 7

मित्रता : सही पहचान

किशोरावस्था में मित्रता महत्त्वपूर्ण, उपयोगी व रोचक रिश्ता है परन्तु मित्रता में अच्छे गुणों का पूर्ण विकास हो तथा दुर्गुणों का अच्छी संगति से नाश हो यह अति आवश्यक पहलू है। अच्छे मित्र की चयन क्षमता व मित्रता को निभाना अच्छे किशोर के लक्षण हैं।

जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं, हम अपने परिवार के अतिरिक्त मित्रों के साथ अधिक समय बिताने लगते हैं। चाहे हमें बाजार जाना हो, सिनेमा जाना हो या फिर कहीं घूमने।

मित्रों का चयन हम स्वयं करते हैं। यह मित्रता बिना किसी बड़े मतलब से जुड़ी हुई होती है और सम्बन्ध बनायें रखने के लिए किसी भी हद को छू सकने की क्षमता रखती है। इस उम्र में मित्र का सहयोग और समर्थन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। सामान्यतः, मित्र अपनी समस्याओं का समाधान मिलकर खोजते हैं। मित्रता, आपसी विश्वास व समझ पर आधारित होती है और एक दूसरे को खुशी प्रदान करती है। मित्र नयी जानकारी के स्रोत होते हैं और हमें एक स्वतन्त्र समझ भी देते हैं, इसलिए मित्रता प्रायः भाई–बहन, माता–पिता एवं शिक्षकों के प्रभाव को कम कर देती है। मित्रता कभी–कभी परिवार के भीतर मतभेद पैदा होने का कारण भी बन जाती है। परिणामस्वरूप कुछ ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनके बारे में माता–पिता कभी–कभी परेशान हो उठते हैं। उदाहरण स्वरूप –

चित्र 7.1

- मित्रों के साथ अधिक समय गुजारना ।
- विभिन्न पृष्ठभूमि के किशोर–किशोरियों से मित्रता।
- अपने से छोटे या अपने से बड़ों के साथ मित्रता रखना।
- विभिन्न किशोर–किशोरियों से मित्रता रखना।

ये सारी परेशानियाँ माता–पिता के अपने अनुभवों, इच्छाओं, रुचियों आदि के कारण होती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि मित्र बनाने में हम अपनी स्वतन्त्र समझ नहीं रख पाते। प्रायः ऐसी स्थिति में हम अपने आपको दुविधा में फँसा हुआ महसूस करते हैं। किसी मित्र के चुनाव में हमें जो बातें आकर्षित करती हैं या आवश्यक लगती हैं वे ही हमारे माता–पिता को अपने अनुभवों के आधार पर गलत लगती हैं। इस तरह से मित्रता में आने वाली बाधाएँ जैसे – परिवार, शिक्षक आदि कभी–कभी अनुकूल नहीं लगते एवं मित्रों के चयन में बाधक लगते हैं।

कुछ लोगों से हम मित्रता करना चाहते हैं किन्तु नहीं कर पाते क्योंकि हमारे माता–पिता, परिवार के सदस्य एवं शिक्षक इस मित्रता पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। क्या कारण हैं जिससे वे किसी एक से तो आपको मिलने देते हैं और दूसरे से मिलने के लिए मना करते हैं ?

यह सही है कि मित्रता से हमें बहुत सहयोग व मदद मिलती है किन्तु यह भी सच है कि कई बार व्यावहारिक तौर पर गलत मित्रता होने पर हम परेशानियों में घिर जाते हैं। इसलिए हमें मित्र बनाने और मित्रता के निर्वहन में भावनात्मक व जिद्दी रवैया नहीं अपनाकर अपने से बड़ों की बात पर गौर करना चाहिए। सारी बातों पर विचार करके ही कोई निर्णय लेना चाहिए। मित्रों का चयन करते समय हमें उनकी आदतों, स्वभाव व सामाजिक छवि का भी ध्यान रखना चाहिए। गलत चुनाव हमारी स्वयं की आदतों व व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है। एक जिम्मेदार किशोर व मित्र होने के नाते यह भी आवश्यक है कि हम अपने मित्रों–सहपाठियों को गलत रास्ते पर जाने से रोकें।

सिसली के राजा ने डेयन को किसी अपराध के कारण मृत्यु दण्ड दिया। मृत्यु दण्ड से पहले राजा ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो उसने कहा, ''मुझे ग्रीस जाकर परिवार का प्रबन्ध करने के लिए एक वर्ष का समय दिया जाए''। राजा ने कहा, ''मैं तुम्हारी अन्तिम इच्छा पूरी करना चाहता हूँ, परन्तु तुम्हारे बदले कारागृह में कौन रहेगा ? और तुम्हारे न लौटने पर मृत्यु दण्ड कौन प्राप्त करेगा ? इसकी व्यवस्था करने पर ही तुम्हारी अन्तिम इच्छा पूरी की जायेगी''। उसके मित्र, पीथियस ने, जो पास ही खड़ा था, इस बात को सुना और कहा, ''मैं अपने मित्र के बदले कारागृह में रहने और निर्धारित अवधि पर डेयन के न लौटने पर मृत्यु दण्ड पाने को तैयार हूँ''। राजा ने डेयन को जाने की अनुमति दे दी। लेकिन कुछ परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि डेयन समय पर न लौट सका। पीथियस को फाँसी देने की तैयारी पूर्ण हो गयी। जैसे ही फंदा उसके गले में डाला जा रहा था, तभी हाँफता हुआ डेयन लौट आया और उसने कहा,''मैं आ गया हूँ, मेरे मित्र को छोड़ दो और मुझे मृत्यु दण्ड दो''। पीथियस ने कहा, ''काश तुम देर से आते तो आज मित्रता की मिसाल कायम हो जाती''। बुद्धिमान राजा ने दोनों की मित्रता को समझा और दोनों की प्रशंसा करते हुए उन्हें छोड़ दिया। राजा ने उन्हें कई उपहार भी दिये और कहा ,''मुझे भी तुम्हारे जैसे मित्रों की आवश्यकता है। यदि तुम दोनों मेरे मित्र बन जाओगे तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि मित्रता में एक मित्र दूसरे मित्र की विशेषताओं व भावनाओं को नहीं समझ पाता। इसका परिणाम यह होता है कि मित्रता में दरार पैदा हो जाती है। मित्रता के सम्बन्ध को मजबूत बनाये रखना आवश्यक है। इसके लिए कुछ मजबूत कड़ियाँ निम्नलिखित हैं –

- **प्रतिबद्धता –** परिपक्वता व समझदारी रखना तथा मित्रता में दरार आने पर अपने फर्ज से मुँह न मोड़ना।
- **सम्मान –** एक दूसरे के प्रति सम्मान रखना व परस्पर विचारों और भावनाओं को महत्त्व देना।
- **स्वीकृति –** स्वयं में सुधार के प्रयास के साथ–साथ एक–दूसरे के दोष व गुणों को पहचान कर उन्हें स्वीकार करना।

मित्र एवं मित्रता के सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि किशोर अपने आप में निर्णय लेने की शक्ति पैदा करें। अपनी जरूरतों को पहचानने एवं पूरा करने के तरीकों को खुद खोजें। मित्र के चयन में आने वाली बाधाओं को समझें और उस पर स्वयं निर्णय लेने की क्षमता पैदा करें। ये कौशल भी सीखें कि गलत मित्रों से कैसे 'ना' कह सकें और सही मित्रों से कैसे 'हाँ' कह सकें।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- मित्रता का हमारे विकास में अत्यन्त महत्त्व है अतः हमें मित्र बनाने चाहिए।
- किशोरावस्था में मित्रों का महत्त्व और बढ़ जाता है।
- मित्र बनाते समय माता–पिता व बड़ों के अनुभवों तथा सुझावों पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए।
- मित्रता में परस्पर प्रतिबद्धता, सम्मान व स्वीकृति का होना आवश्यक है।

जानें, समझें और करें

1. आपके सबसे अच्छे मित्र का नाम क्या है ?

....

....

- वह आपका सबसे अच्छा मित्र है, क्योंकि उसमें नीचे लिखे गुण हैं –

....

....

2. कोई ऐसी घटना याद करें जिसमें आपकी मित्रता टूट गई और आपको बहुत दुःख हुआ।

....

....

मित्रता टूटने के कारण	अफसोस के कारण
....	....
....	....
....	....

• यदि उसी मित्र से मित्रता को बनाये रखना हो, तो क्या करना चाहिए ?

....

....

3. उचित विकल्प पर सही का (✓) निशान लगाइए –

• राजू को सभी मित्र अच्छा समझते हैं क्योंकि वह –

(अ) दूसरों की बुराई नहीं करता है।
(ब) हमेशा हँसी मजाक करता है।
(स) सभी मित्रों की मदद करता है।
(द) यदि कोई दुःखी दिखता है तो उसके दुःख में भागीदार बनता है।

• आपका एक मित्र/सहेली आपको छुप–छुप कर अकेले में मिलने के लिए कहता/कहती है तो आप –

(अ) उसकी बात मान लेंगे।
(ब) सोच कर जवाब देने के लिए कहेंगे।
(स) कड़े शब्दों में मना कर देंगे।
(द) उससे खुलकर बात करेंगे और विनम्रता पूर्वक मना कर देंगे।

चित्र 7.2

"अच्छा मित्र वही है जो बुराई से भलाई के कार्य में लगाता है और गुप्त बात को छुपाता है, गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति में साथ देता है और समय पर सहायता करता है।" – अज्ञात